रणजीत टाइम्स

वर्ष : 1, अंक: 129 इंदौर, शनिवार 17 मई 2025

RNI-NO.MPHIN/2015/64585

DIGITAL EDITION

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव हुए तिरंगा यात्रा में शामिल- पूरा इंदौर हुआ देश भक्ति से ओतप्रोत

अपने शौर्य और पराक्रम से वीरता की अप्रतिम गाथा रचने वाले भारत के वीर सैनिकों के सम्मान में निकली तिरंगा यात्रा

हर तरफ हुआ भारत माता की जय और वंदेमातरम् का उदघोष समाज के हर धर्म, हर जाति, हर वर्ग ने दिखाई अपनी राष्ट्रभक्ति की झलक

रणजीत टाईम्स- अनिल चौधरी

इंदौर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव आज इंदौर में अपने शौर्य और पराक्रम से वीरता की अप्रतिम गाथा रचने वाले भारत के वीर सैनिकों के सम्मान में अपार जोश और उल्लास के साथ निकली तिरंगा यात्रा में शामिल हुए। यह तिरंगा यात्रा बड़ा गणपति से प्रारंभ हुई और गोराकुण्ड, खजुरी बाजार होते हुए ऐतिहासिक महत्व के राजबाड़ा पर सम्पन्न हुई। पूरी यात्रा में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव विशेष रथ में सवार थे और हर तरफ हाथ हिलाकर उन्होंने नागरिकों का अभिवादन किया। इस यात्रा के माध्यम से पूरा शहर राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत हो गया और पूरा आसमान भारत माता की जय तथा वंदेमातरम् के उदघोष से गुंजायमान रहा। यात्रा में बच्चों से लेकर वृद्धों तक हर आयु वर्ग के लोगों की भागीदारी रही। यात्रा में हर धर्म, हर जाति और हर वर्ग के लोग इस यात्रा में शामिल हुये और उन्होंने अपने राष्ट्रप्रेम की झलक बिखरते हुए सेना के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। यात्रा में नगरीय विकास एवं आवास

मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, सांसद शंकर लालवानी तथा सुश्री कविता पाटीदार, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, विधायकगण रमेश मेंदोला, गोलू शुक्ला, श्रीमती मालिनी गौड़, महेंद्र हार्डिया, मनोज पटेल, सुमित मिश्रा तथा श्रवण चावड़ा सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी साथ थे।

भारतीय सेना ने दिखायी ऐतिहासिक शौर्य, पराक्रम और वीरता यात्रा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अब नए दौर का शक्तिशाली भारत दिखाई दे रहा है। भारत के नए दौर में ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से हमारी तीनों सेना ने अपने साहस, शौर्य, पराक्रम और वीरता से दुश्मनों को करारा जवाब दिया है। भारतीय सेना ने दुश्मन को अल्प समय में ऐतिहासिक जवाब दिया है। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से पूरी दुनिया ने हमारी ताकत, एकजुटता और अत्याधुनिक हथियारों का उपयोग देखा है। आतंकवादियों के मंसूबों को भी नाकाम किया गया है। कोई भी ताकत अब भारत को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। हम सब सेना को सम्मान देने के लिए इस यात्रा में एकत्रित हुए हैं। लगातार तिरंगा यात्राओं के माध्यम से सेना के प्रति सम्मान व्यक्त किया जा रहा है। यह यात्रा जिला से लेकर पंचायत स्तर तक लगातार जारी रहेगी। उन्होंने इंदौर की तिरंगा यात्रा को ऐतिहासिक बताया। महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तिरंगा यात्रा के प्रारंभ में बड़ा गणपति पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने तिरंगा यात्रा के समापन के पश्चात मां देवी अहिल्या बाई होलकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर को समर्पित 10 दिनी उत्सव का होगा आयोजन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बताया कि प्रदेश में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जयंती मनाई जा रही है। यह संयोग है कि 20 मई को तिथि के अनुसार उनकी जयंती है और विवाह की वर्षगांठ भी है। साथ ही उनके ससुर मल्हारराव होलकर की पुण्यतिथि भी है। इसको देखते हुए 20 मई को इंदौर के राजवाड़ा में केबिनेट की बैठक आयोजित की जा रही है। इसी दिन से पूरे प्रदेश में 10 दिनी उत्सव का आयोजन भी शुरू किया जा रहा है। इसका समापन भोपाल में भव्य रूप से 31 मई को किया जाएगा। प्रदेश में 10 दिनी उत्सव के तहत जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

इंदौर एवं उज्जैन संभाग में आने वाले स्थानीय निकायों की समीक्षा बैठक सम्पन्न

नगरीय निकायों की राजस्व आय में बढ़ोत्तरी के लिये हों ठोस प्रयास

रणजीत टाईम्स- अनिल चौधरी

इंदौर। नगरीय प्रशासन एवं विकास आयुक्त संकेत भोंडवे ने इंदौर में शुक्रवार को उज्जैन और इंदौर संभाग के अंतर्गत आने वाले नगर निगम, नगरपालिका एवं नगर परिषदों के विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में अमृत-2.0, स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के क्रियान्वयन की समीक्षा की गयी। बैठक में कायाकल्प, मुख्यमंत्री नगरीय अधोसंरचना निर्माण योजना, मुख्यमंत्री विकास योजना, चतुर्थ चरण के अंतर्गत हो रहे कार्यों की प्रगति पर चर्चा की गयी। बैठक में आयुक्त भोंडवे ने निकायों के अधिकारियों से कहा कि विकास कार्यों में तेजी लाने के लिये राजस्व आय बढ़ाने के लिये भी प्रयास हों। बैठक में नगरीय निकायों के कर्मचारियों के वेतन भुगतान की स्थिति, पेयजल आपूर्ति, विद्युत बिलों के भुगतान की जानकारी प्राप्त की गयी। समीक्षा बैठक में निर्देश दिये गये कि वर्षा के पहले प्रत्येक निकाय अपने क्षेत्र के नालों की सफाई और जीर्णशीर्ण भवनों की स्थिति का आंकलन कर खाली कराने की कार्यवाही अभी से करें। बैठक में सीएम हेल्पलाइन और सीएम मॉनीटर पोर्टल पर प्राप्त जन-शिकायतों एवं घोषणाओं की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली गयी। विभागीय अधिकारियों को उच्च न्यायालय से संबंधित अवमानना प्रकरणों पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिये गये। आयुक्त नगरीय प्रशासन ने कहा कि शहर में अग्निशमन, वायु गुणवत्ता सुधार, ऐतिहासिक शहरों में सौंदर्यीकरण के लिये इनसे जुड़े विभागों से राशि प्राप्त की जाये। उन्होंने निकायों की हॉर्टीकल्चर विंग को सक्रियता के साथ कार्य करने के निर्देश दिये। आयुक्त नगर निगम इंदौर शिवम वर्मा ने बताया कि इंदौर शहर को 110 नई ईव्ही बसें प्रदान की गयी हैं। उन्होंने इंदौर में स्वच्छता के क्षेत्र में लगातार हो रहे उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी दी।

इंदौर में लव जिहाद के खिलाफ हिंदू संगठनों का प्रदर्शन, ज्ञापन सौंपा

राजेश धाकड़

इंदौर। शहर में लव जिहाद के बढ़ते मामलों को लेकर शुक्रवार को सकल हिंदू समाज के बैनर तले विभिन्न हिंदू संगठनों ने कलेक्टर कार्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नाम एक ज्ञापन सौंपा, जिसे कलेक्टर कार्यालय के गेट पर चिपकाया गया। प्रदर्शन के दौरान संगठन के सदस्यों ने लव जिहाद के मामलों को लेकर सरकार और प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग की। उनका कहना है कि ऐसे मामलों पर स्वतः संज्ञान लिया जाए और दोषियों को कड़ी सजा दी जाए। संगठन ने ज्ञापन के माध्यम से लव जिहाद में संलिप्त लोगों को फांसी की सज़ा देने की भी मांग की। हिंदू संगठन इंदौर के प्रतिनिधि सुमित हार्डिया ने कहा कि, "हमारी मांग है कि लव जिहाद जैसे गंभीर मुद्दे पर सरकार कठोर कदम उठाए। यह सिर्फ एक समुदाय का नहीं, बल्कि पूरे समाज की सुरक्षा का सवाल है।" प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहा, लेकिन संगठन ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगों पर जल्द कार्रवाई नहीं हुई, तो आंदोलन को और तेज किया जायेगा।

हाट ऑफ़ आर्ट ने इंदौर में किया अपने 10वें भव्य प्रदर्शनी का शुभारंभ!

रणजीत टाईम्स- अनिल चौधरी

इंदौर। भारतीय कला परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाला मंच द हाट ऑफ़ आर्ट आज अपने 10वें भव्य संस्करण के साथ मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक राजधानी इंदौर में पहली बार प्रस्तुत हुआ। प्रख्यात क्यूरेटर ज्योति यादव द्वारा आठ वर्ष पूर्व स्थापित यह मंच अब मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु और इंदौर जैसे प्रमुख शहरों में अपनी गहरी छाप छोड़ चुका है। इस विशेष संस्करण में 100 से अधिक प्रतिभाशाली कलाकारों ने भाग लिया, जिनमें 30 से अधिक एमपी पुलिस कर्मियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया, साथ ही कई नामचीन जनजातीय कलाकारों ने भी अपनी कला प्रस्तुत की।

यह तीन दिवसीय प्रदर्शनी, जो 18 मई तक चलेगी, का उद्घाटन द हाट ऑफ़ आर्ट के संरक्षक विंदू दारा सिंह, कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय , मंत्री तुलसीराम सिलावट , डॉ. सीमा अलावा जी एवं पद्मश्री से सम्मानित महेश शर्मा , जनक पल्टा जी, और भालू मोन्धे सहित कई अन्य विशिष्ट अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। यह अवसर इंदौर के लिए ऐतिहासिक है — जहां पहली बार इतनी बड़ी, व्यावसायिक रूप से जीवंत और कलाकार-केंद्रित कला प्रदर्शनी पेश की गई है। उपस्थित मंत्रियों ने इस पहल की सराहना करते हुए वचन दिया कि मध्यप्रदेश में द हाट ऑफ़ आर्ट की पहुंच को और व्यापक बनाया जाएगा, खासकर पिथोरा और गोंड जैसी पारंपरिक आदिवासी कलाओं को संरक्षण व मंच देने के लिए। हर संस्करण के साथ द हाट ऑफ़ आर्ट यह साबित करता है कि भारत में कला को किस तरह एक नए दृष्टिकोण और ऊर्जा के साथ प्रस्तुत किया जा सकता है। इस मंच का उद्देश्य स्पष्ट है: भारतीय कलाकारों को समर्थन देना, पारंपरिक कलाओं को संरक्षित करना, और सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के लिए नए अवसरों का निर्माण करना।

पुलिस और प्रशासन के सामने से निकल रहे ओवरलोड राखड़ के ट्रक, बगैर अनुमति के चल रहा खेल!

यातायात पुलिस फोन सुनकर मौके से वापिस लौटी !

टीकमगढ़। नगर पालिका क्षेत्र में धड़ल्ले से ओवरलोड वाहनों की आवाजाही हो रही है। इन वाहनों से पुलिस और यातायात विभाग अनजान बना हुआ है, यह वाहन जब लंबी कतारों में निकलते हैं तो सड़क पर जाम लग जाता है। जिससे अन्य वाहनों को और राहगीरों को परेशानी होती है साथ ही दिन के समय में जब शहर में नो एंट्री रहती है इसके बावजूद भी है वहां धड़ल्ले से निकल रहे हैं। यह ट्रक टीकमगढ़ नगरपालिका क्षेत्र अंतर्गत जिला जेल के सामने दिव्यांग पुनर्वास केंद्र में बजाज पावर जनरेशन ललितपुर से राखड़ लेकर पुराई का कार्य कर रहे है, जिसके लिए खनिज विभाग, कलेक्टर कार्यालय और प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से अनुमति लेनी होती है, लेकिन सूत्र बताते है कि बगैर अनुमति के यह कार्य किसी सफेद पोश नेता के इशारे पर यह कार्य किया जा रहा है। जिसमे जिले के सभी अधिकारी राजनैतिक दबाब के चलते इस कंपनी ठेकेदार पर कार्यवाही करने से बचते नजर आ रहे है। जिसकी जिला जेल के आसपास निवासरत लोगो ने सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई है, और कहा कि दिव्यांग पुनर्वास केंद्र से बहुत पुराना नाला निकला है, जिससे जिले की कई कॉलोनियों का पानी निकलता है, अब ऐसे में नाले की पुराई हो जाने पर मुहल्ले वासियो को वरसात में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। वही यह बजाज पावर प्लांट से निकली जहरीली राखड़ बगैर पॉल्युशन बोर्ड की अनुमति के कहि नही डाली जा सकती लेकिन जिले के अधिकारियों पर राजनैतिक दबाब और उदासीनता के चलते फ्लाई ऐश का कार्य कराया जा रहा है ।

यातायात को नजर नही आये ओवरलोड वाहन !

बजाज पावर प्लांट जनरेशन ललितपुर में राखड़ का कार्य कर रही कंपनी के ओवरलोड वाहन टीकमगढ़ शहर में धड़ल्ले से बेरोक-टोक दौड़ रहे है। अगर इनकी जगह कोई और ओवरलोड वाहन होता तो कबका पुलिस और यातायात विभाग उसे चपेट लेता, लेकिन सूत्रों ने बताया कि यह कार्य किसी सफेदपोश नेता का चल रहा है, जिसकी शिकायत होने के बाबजूद भी यातायात पुलिस मौके से गाड़ियों को छोड़कर खाली हाँथ वापिस लौट आई थी। जब गुरुवार को मीडिया को इसकी जानकारी लगी तो उन्होंने मामले की जानकारी अपर कलेक्टर को दी, जिन्होंने खनिज विभाग और यातायात से कार्यवाही करने की बात कही, लेकिन यातायात तो मौके पर पहुंची और किसी नेता का फोन आने पर खाली हाँथ वापिस आना पड़ा ।

इनका कहना है

जब इस मामले में सागर कमिश्नर वीरेंद्र सिंह रावत से मामले में चर्चा की गई तो उन्होंने कहा कि वह जल्द ही इस मामले में अधिकारियों को निर्देश देकर कार्यवाही करवाएंगे ।

इनका कहना है

जब इस मामले में नगर पालिका सीएमओ ओमपाल सिंह भदोरिया से नाला बंद होने के मामले में जानकारी चाही गई, तो उन्होंने बताया कि जो कंपनी यहां फ्लाई ऐश कर रही है उन्होंने पहले कहा था कि वह नाले का निर्माण कराएंगे। अब अगर नल नहीं बनाया गया है, तो बरसात के पूर्व अस्थाई नाले का निर्माण कराया जाएगा। जिससे मोहल्ले वासियों को परेशानी ना हो।

रिपोर्ट - सालिम खान
टीकमगढ़

आर्ट ऑफ़ गिविंग 2025- इंदौर में जरूरतमंद बच्चों को मिली पढ़ाई की सौगात

राजेश धाकड़

इंदौर। "आर्ट ऑफ़ गिविंग 2025" अभियान के अंतर्गत इंदौर में 'नेबरगुड थीम' पर एक विशेष सेवा गतिविधि का आयोजन किया गया। इस आयोजन में घुमंतू कार्य और संस्था धर्मवीर के सहयोग से जरूरतमंद बच्चों को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई। इस सराहनीय पहल का नेतृत्व मध्यप्रदेश की ब्रांड एम्बेसडर अधिवक्ता मानसी जैन ने किया। इस अवसर पर बच्चों को पेन, पेंसिल, कॉपियां और अन्य आवश्यक अध्ययन सामग्री भेंट की गई। बच्चों के चेहरों पर खिली मुस्कान और उनकी आंखों में पढ़ाई के प्रति चमक इस अभियान की सफलता को बयां कर रही थी।मानसी जैन ने इस मौके पर कहा, "आर्ट ऑफ़ गिविंग केवल एक

अभियान नहीं, बल्कि भावनाओं और अवसरों को साझा करने का माध्यम है। यह एक ऐसा मंच है, जो समाज को जोड़ने और जरूरतमंदों की मदद करने की प्रेरणा देता है।" इस अभियान में स्थानीय युवाओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे यह सेवा प्रयास और अधिक प्रभावशाली बन गया। आयोजन का उद्देश्य केवल सामग्री देना नहीं, बल्कि बच्चों को शिक्षा की ओर प्रेरित करना और समाज में सकारात्मक बदलाव लाना रहा। यह आयोजन इस बात का प्रतीक बना कि जब समुदाय एकजुट होकर छोटे प्रयास करता है, तो बड़े बदलाव की नींव रखी जा सकती है।

ध्यान की अवस्था का अनुभूत प्रयोग ही सहजयोग की विशेषता है

रणजीत टाइम्स
इंदौर, शनिवार 17 मई 2025
03
DIGITAL EDITION

भाजपा को अपनों की ज़ुबान पर लगाम कसने की पड़ी जरूरत, विवादित बयानों से घिरी पार्टी अब देगी अपने नेताओं को बोलने की ट्रेनिंग

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजनीति इन दिनों भाजपा के नेताओं की जुबानी फिसलन के कारण लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। जिस पार्टी की पहचान लंबे समय से अनुशासन और नियंत्रित वक्तव्य के तौर पर होती थी, वहीं अब खुद उसके मंत्री और विधायक अपने बयानों से पार्टी की साख पर बट्टा लगा रहे हैं। बीते दिनों मंत्री विजय शाह और उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा के विवादित और असंवेदनशील बयानों ने भाजपा नेतृत्व को असहज स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। नतीजतन, पार्टी अब डैमेज कंट्रोल की दिशा में बड़ा कदम उठाने जा रही है। पार्टी सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, भाजपा ने तय किया है कि वह अपने सभी मंत्रियों और विधायकों को बोलने का बाकायदा प्रशिक्षण देगी। यह फैसला उस समय लिया गया जब एक के बाद एक विवादों ने पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचाना शुरू कर दिया। मंत्री विजय शाह ने सेना की महिला अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर एक बेहद अपमानजनक टिप्पणी की थी, जिससे न सिर्फ सैन्य प्रतिष्ठान आहत हुआ, बल्कि जनता में भी व्यापक नाराजगी देखी गई। उन्होंने कहा था कि जिन आतंकियों ने हमारी बहनों का सिंदूर उजाड़ा, प्रधानमंत्री ने उन्हीं की बहन को भेजकर उनकी ऐसी-तैसी करवाई। उनका यह बयान न केवल सेना की गरिमा पर चोट था, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी अशोभनीय और अमर्यादित था। वहीं दूसरी ओर उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने जबलपुर के एक कार्यक्रम में ऐसा बयान दे डाला जिससे पूरी सेना का अपमान होता प्रतीत हुआ। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के आतंकियों को सबक सिखाने के लिए सिर्फ पूरा देश ही नहीं, बल्कि देश की सेना भी प्रधानमंत्री के चरणों में नतमस्तक है। यह बयान सुनते ही कार्यक्रम में मौजूद लोग हतप्रभ रह गए और सोशल

मीडिया से लेकर सियासी गलियारों तक इसकी आलोचना शुरू हो गई।

इन दोनों नेताओं के बयानों ने भाजपा को बैकफुट पर ला खड़ा किया है और अब पार्टी ने तय किया है कि वह अब अपने मंत्रियों और विधायकों को सार्वजनिक मंच पर बोलने से पहले सिखाएगी कि क्या कहना है और क्या नहीं कहना है। प्रशिक्षण का आयोजन जून महीने में किया जाएगा, जिसमें प्रदेश के सभी 164 भाजपा विधायक हिस्सा लेंगे। यह प्रशिक्षण भोपाल से बाहर किसी शांत स्थान पर आयोजित किया जाएगा, जहां नेताओं को मीडिया से बातचीत, जनसभाओं और संवेदनशील मुद्दों पर कैसे संयमित और मर्यादित भाषा का प्रयोग किया जाए, इसका व्यावहारिक अभ्यास करवाया जाएगा। नर्मदा तट पर यह प्रशिक्षण शिविर आयोजित होने की संभावना जताई जा रही है, ताकि वहां एक सकारात्मक और अनुशासित वातावरण में यह अभ्यास हो सके। भाजपा का यह कदम यह भी दर्शाता है कि उसे अब यह अहसास हो गया है कि जनता की अदालत में शब्दों का वजन बहुत होता है और एक भी गलत बयान पार्टी की वर्षों की मेहनत पर पानी फेर सकता है। पार्टी नेतृत्व ने अपने विधायकों और मंत्रियों को स्पष्ट संदेश दिया है कि वे विशेषकर 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे भावनात्मक मुद्दों पर बोलते समय सावधानी बरतें और ऐसे किसी भी वक्तव्य से बचें जो सेना, महिलाओं या किसी भी वर्ग के सम्मान को ठेस पहुंचा सके।

मध्य प्रदेश सरकार ने हटाया अवकाश पर लगा प्रतिबंध, सामान्य प्रशासन विभाग ने जारी किए नए आदेश

भोपाल। मध्य प्रदेश के हजारों सरकारी कर्मचारियों और पुलिसकर्मियों के लिए बड़ी राहत की खबर सामने आई है। राज्य सरकार ने उन पर लगाए गए अवकाश प्रतिबंध को हटा दिया है जो हाल ही में भारत और पाकिस्तान के बीच उत्पन्न तनाव के चलते लागू किया गया था। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा इस संबंध में औपचारिक आदेश जारी कर दिए गए हैं। अब संबंधित विभागों के कर्मचारी अपनी सामान्य छुट्टियों का लाभ पुनः ले सकेंगे। कुछ सप्ताह पूर्व जब भारत-पाकिस्तान के बीच सीमा पर हालात तनावपूर्ण हो गए थे, उस समय मध्य प्रदेश सरकार ने 'ऑपरेशन सिंदूर' नामक विशेष सुरक्षा अभियान शुरू किया था। इस अभियान के तहत सरकार ने एहतियातन 13 महत्वपूर्ण विभागों और पुलिस बल के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सामान्य छुट्टियों को तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया था। उद्देश्य था कि किसी भी आपात स्थिति में राज्य का प्रशासनिक ढांचा पूरी तरह से सतर्क और तैनात रह सके। सुरक्षा और निगरानी के लिहाज से यह निर्णय बेहद महत्वपूर्ण माना गया और इसने प्रशासन को हर परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रखा। 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान स्वास्थ्य, गृह, राजस्व, परिवहन, खाद्य, चिकित्सा, ऊर्जा, जल संसाधन, लोक निर्माण,

ग्रामीण विकास, शहरी प्रशासन, जनसंपर्क और सामान्य प्रशासन जैसे प्रमुख विभागों को अलर्ट पर रखा गया था। इन विभागों के कर्मचारियों को न केवल छुट्टी से वंचित रहना पड़ा, बल्कि उन्हें 24 घंटे की निगरानी और सेवा में तत्पर रहने का आदेश दिया गया था। वहीं पुलिस बल को भी विशेष सतर्कता के साथ पूरे प्रदेश में गश्त बढ़ाने और संवेदनशील क्षेत्रों की निगरानी करने का निर्देश दिया गया था। लेकिन अब जब सीमा पर स्थितियाँ नियंत्रण में आ गई हैं और केंद्र सरकार से भी किसी प्रकार की आपातकालीन स्थिति की सूचना नहीं दी गई है, तो मध्य प्रदेश सरकार ने यह निर्णय वापस ले लिया है। सामान्य प्रशासन विभाग की ओर से स्पष्ट कर दिया गया है कि अब सभी कर्मचारी अपनी निर्धारित सामान्य छुट्टियों पर जा सकते हैं और अवकाश स्वीकृति प्रक्रिया सामान्य रूप से बहाल कर दी गई है। राज्य सरकार के इस फैसले से सरकारी कर्मचारियों में राहत और संतोष का माहौल है। लंबे समय से ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों को अब थोड़ी राहत मिलेगी और वे अपने पारिवारिक एवं व्यक्तिगत दायित्वों के लिए समय निकाल पाएंगे। वहीं पुलिस विभाग के जवानों को भी अब थोड़ा विश्राम मिल सकेगा जो अब तक बिना छुट्टी के लगातार सेवा में लगे हुए थे।

ग्वालियर के 'शाही परिवार' का विवाद सुप्रीम कोर्ट पहुंचा, रोल्स रॉयस को लेकर खींचतान पर न्यायालय की फटकार, कहा - 'महाराजा की तरह व्यवहार न करें'

ग्वालियर। देश में लोकतंत्र की स्थापना को 75 साल से अधिक हो चुके हैं, लेकिन ग्वालियर के 'शाही परिवार' का आंतरिक विवाद अब भी शाही अंदाज़ में ही जारी है। इसी तरह के एक मामले में सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करना पड़ा, जहां ग्वालियर राजपरिवार से जुड़े एक दंपति के बीच आलीशान रोल्स रॉयस कार को लेकर विवाद गहरा गया। इस मामले की सुनवाई करते हुए शीर्ष अदालत ने दंपति को कड़ी फटकार लगाई और कहा कि वे अब महाराजा की तरह व्यवहार करना बंद करें। न्यायमूर्ति सूर्य कांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने सुनवाई के दौरान स्पष्ट शब्दों में टिप्पणी करते हुए कहा कि यह मामला दरअसल दो 'शाही परिवारों' के बीच अहंकार की टकराहट जैसा प्रतीत होता है। अदालत ने दोनों पक्षों के वकीलों को निर्देश दिया कि वे अपने-अपने मुवक्किलों से बात करें और अदालत को स्पष्ट करें कि इस विवाद को सुलझाने के लिए उनकी मंशा क्या है।

सुप्रीम कोर्ट का रुख इस मामले में स्पष्ट था कि लोकतांत्रिक देश में राजसी ठाठ या पुरानी विरासत की आड़ में कानून की प्रक्रिया को उलझाया नहीं जा सकता। अदालत ने यह भी कहा कि ऐसे विवादों को अदालत तक खींच लाना अनुचित है और इससे संसाधनों की भी बर्बादी होती है। कोर्ट ने दोनों पक्षों से यह भी अपेक्षा जताई कि वे अपनी स्थिति को समझें और आपसी समझ से समाधान निकालें। गौरतलब है कि ग्वालियर का शाही परिवार देश की पूर्व राजशाही परंपराओं से जुड़ा रहा है, लेकिन वर्तमान समय में कानूनी अधिकारों, संपत्ति और विरासत से जुड़े मुद्दों पर आए दिन ऐसे मामले सामने आते हैं, जो अंततः अदालतों तक पहुंचते हैं। यह मामला भी कुछ ऐसा ही है, जहां एक शानदार कार को लेकर मतभेद इतना बढ़ गया कि मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया।

दिल्ली में आयुष्मान भारत योजना का दिख रहा असर

73 वर्षीय कैंसर मरीज को मिली नई जिंदगी

नई , एजेंसी। की बीमारी का नाम सुनकर ही लोग सहम जाते हैं। ऊपर से जांच का भारी भरकम खर्च और दवाओं की महंगी कीमतों के कारण कई मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल पाता। इस बीच पिछले ही माह कैंसर से पीड़ित हुए दिल्ली के रहने वाले एक 73 वर्षीय बुजुर्ग के लिए मुश्किल वक्त में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) सहरा बनकर सामने आई। एम्स में उनका निशुल्क इलाज हुआ है। एबी-पीएमजेएवाई के तहत वह एम्स में इलाज पाने वाले दिल्ली के पहले मरीज हैं।

सादिक नगर के नजदीक सांवल नगर के रहने वाले 73 वर्षीय बुजुर्ग राकेश कुमार ने बताया कि वह प्राइवेट नौकरी से सेवानिवृत हैं। पिछले माह अचानक शौच के साथ ब्लड आने की समस्या शुरू हुई। आठ अप्रैल को जांच कराने पर पता चला कि पेट के आंत में ट्यूमर था। निजी अस्पताल में बायोप्सी और सीटी स्कैन जांच में 11,500 रुपये खर्च हुआ।

पांच अप्रैल को ही दिल्ली में एबी-पीएमजेएवाई लागू करने के लिए केंद्र सरकार के राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण और दिल्ली सरकार राज्य स्वास्थ्य एजेंसी के साथ समझौता हुआ था और

दस अप्रैल से लाभार्थियों का कार्ड बनना शुरू हुआ था लेकिन तब 70 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बुजुर्गों का इस योजना के तहत आयुष्मान वय वंदना कार्ड नहीं बन रहा था।

उन्होंने बताया कि कैंसर होने की बात जानकर मन परेशान था। किसी तरह 22 अप्रैल को एम्स में दाखिला मिला। अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान आयुष्मान भारत पोर्टल व ऐप पर उन्होंने सर्च किया तो पता चला कि उनका पंजीकरण हो सकता है और उन्हें इसका लाभ भी मिल सकता है। तब एम्स के आयुष्मान केंद्र में 27 अप्रैल को उनका कार्ड बना और 29 अप्रैल को एम्स में उनकी सर्जरी भी हो गई। इसके बाद वह करीब छह दिन एम्स में भर्ती रहे। इस दौरान उन्हें सभी आवश्यक दवाएं भी निशुल्क उपलब्ध कराई गई।

उन्होंने बताया कि एबी-पीएमजेएवाई योजना से पंजीकृत होने से पहले उन्हें कुछ दवाएं खरीदनी पड़ रही थी। सर्जरी के बाद ज्यादा दवाएं चली। यदि उन्हें एबी-पीएमजेएवाई का लाभ नहीं मिला होता तो उन्हें परेशानी हो सकती थी। सर्जरी के बाद निकाले गए ट्श्यू की जांच रिपोर्ट अभी नहीं आई है। डॉक्टर ने 15 दिन में रिपोर्ट आने पर दोबारा अस्पताल में बुलाया है। तब डाक्टर बताएंगे कि आगे उन्हें कीमोथेरेपी की जरूरत है या नहीं। फिलहाल वह ठीक हैं।

उनकी तरह अब तक दिल्ली के रहने वाले 18 मरीज एम्स में एबी-पीएमजेएवाई के तहत इलाज पा चुके हैं। जिसमें नौ 70 वर्ष से अधिक उम्र के मरीज शामिल हैं। अब तक एबी-पीएमजेएवाई का लाभ पाने वालों में

छह कैंसर मरीज, छह आर्थोपेडिक के मरीज व चार जनरल सर्जरी के मरीज शामिल हैं। आर्थोपेडिक के चार मरीजों 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले हैं। जिसमें से एक मरीज की उम्र 84 वर्ष से अधिक है। बुढ़ापे में घुटने व कूल्हे की समस्या अधिक होती है। बताया जा रहा है कि हड्डियों के बीमारी से पीड़ित बुजुर्गों को इंप्लांट भी लगाया गया है।

अकाउंटेंट की नौकरी छोड़ साइबर ठगों को मुहैया कराते थे बैंक खाते

साथी समेत गिरफ्तार

नोएडा, एजेंसी। साइबर ठगों को बैंक खाते उपलब्ध कराकर डिजिटल अरेस्ट जैसी ठगी करवाने वाले अकाउंटेंट और उसके दोस्त को साइबर क्राइम थाना पुलिस ने बृहस्पतिवार को मुरादाबाद से गिरफ्तार किया। दोनों करीब 14 करोड़ रुपये बैंक खातों में ट्रांसफर करा चुके हैं। दोनों के खिलाफ एनसीआरपी पोर्टल पर 33 शिकायत दर्ज हैं। दोनों ने नोएडा के बुजुर्ग से हुई 2.39 करोड़ की साइबर ठगी में बैंक खाते उपलब्ध कराए थे। मामले में एक आरोपित को पूर्व में जेल जा चुका है। नोएडा सेक्टर 36 के रहने वाले विदेश सेवा से सेवानिवृत्त एससी मल्होत्रा को 42 दिन डिजिटल अरेस्ट रखकर 2.39 करोड़ रुपये की ठगी की गई थी। पीड़ित ने 18 मार्च को साइबर क्राइम थाने में मामला दर्ज कराया था। पुलिस टीम साइबर ठगों की तलाश में जुटी है। जांच के दौरान दो ठगों की लोकेशन मुरादाबाद में मिली थी। पुलिस ने दोनों को बृहस्पतिवार दबोच लिया। इनकी पहचान मुरादाबाद के कृष्णा कॉलोनी के मुकेश सक्सेना व मुरादाबाद के धीमरी रोड करूला के अनीश अहमद के रूप में हुई। डीसीपी साइबर सेल प्रीति यादव ने बताया कि मुकेश पेशे से अकाउंट्स का काम करता था। पैसों की जरूरत के चलते अनीस अहमद के संपर्क में आ गया था। दोनों ने मिलकर साइबर ठगों को करंट अकाउंट खाते उपलब्ध कराने का काम शुरू कर दिया। इनमें ठगी की धनराशि मंगाकर कमीशन प्राप्त करते थे। नोएडा में हुई 2.39 करोड़ की ठगी की धनराशि में से 18 लाख रुपये प्राप्त किए थे। धनराशि को आपस में बांट लिया था। जांच में यह पता चला है कि अनीस बैंक खातों में 12 करोड़ तो मुकेश दो करोड़ रुपये ठगी के प्राप्त कर चुका है। अनीश के खिलाफ एनसीआरपी पोर्टल पर 15 और मुकेश पर 18 शिकायते हैं। इनमें दिल्ली, झारखंड, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश राज्य शामिल हैं।

दिल्ली एम्स के ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती

एयरलिफ्ट कर लाए गए, हाल-चाल जानने पहुंचे अमित शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को एम्स ट्रामा सेंटर पहुंचकर छत्तीसगढ़ के बीजापुर और तेलंगाना की सीमा के नजदीक करेंगुट्टा हिल के नजदीक माओवादियों के साथ मुठभेड़ में घायल हुए सीआरपीएफ के जवानों से मिले और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली।

उन्होंने एम्स ट्रामा सेंटर प्रशासन को उनके बेहतर इलाज और देखभाल का निर्देश दिया। बाद में उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि सुरक्षा बल अपनी वीरता से माओवाद का नामोनिशान मिटा रहे हैं। देश को अपने जवानों पर भरोसा है और पूरा देश उन पर गर्व करता है।

सुरक्षा बलों ने करेंगुट्टा हिल के पास 21 दिन तक चले इस सर्च ऑपरेशन में 31 माओवादियों को मार गिराया है। इस ऑपरेशन में सीआरपीएफ के कोबरा (कमांडो बटालियन फार रेजोल्यूट एक्शन), स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरएफ) के जवान शामिल रहे। इस अभियान के दौरान 18 जवान आइईडी विस्फोट में घायल हुए। उन सभी का विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है। वे सभी खतरे से बाहर बताए जा रहे हैं। एम्स के एक डॉक्टर ने बताया कि ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती किए गए हैं, जो एयर लिफ्ट करके लाए गए हैं। उन सभी की हालत स्थिर है। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन सभी मुलाकात की। इस दौरान उनके परिजनों से भी मिले। करेंगुट्टा हिल के पास मुठभेड़ के दौरान घायल हुए सीआरपीएफ के 204 कोबरा बटालियन के सहायक कमांडेंट सागर बोराडे को चार मई को रायपुर से एयर लिफ्ट करके दिल्ली लाया गया था और उन्हें एम्स ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया था। उन्होंने सर्च ऑपरेशन

के दौरा अदम्य साहस का परिचय देते हुए आइईडी विस्फोट में घायल सीआरपीएफ के एक जवान को अपनी सुरक्षा का परवाह किए बगैर सुरक्षित निकालने का प्रयास किया। इस दौरान एक आईईडी ब्लास्ट होने से वह घायल हो गए। इस वजह से उनका बायां पैर क्षतिग्रस्त हो गया था और बायें हाथ में भी गंभीर चोट लगी थी।

युद्ध के दौरान हुआ नुकसान या चली गई जान

तो क्या बीमा कंपनी से मिलेगा क्लेम

नई दिल्ली, एजेंसी। युद्ध विराम के बाद लोग अब अपने जान-माल को युद्ध और युद्ध जैसी स्थिति में होने वाले नुकसान से बचाने के लिए बीमा कवरेज की पड़ताल कर रहे हैं। लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या उनकी इंश्योरेंस पॉलिसी उन्हें सुरक्षा देगी।

22 अप्रैल को जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था। जिसके चलते युद्ध की आशंकाएं गहराने लगी थीं। युद्ध विराम के बाद लोग अब अपने जान-माल को युद्ध और युद्ध जैसी स्थिति में होने वाले नुकसान से बचाने के लिए बीमा कवरेज की पड़ताल कर रहे हैं। लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या उनकी इंश्योरेंस पॉलिसी उन्हें सुरक्षा देगी। युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति से तात्पर्य किसी देश के बीच सैन्य संघर्ष, आतंकी हमले, गृहयुद्ध, बम धमाके, मिसाइल हमले या परमाणु हमले से उत्पन्न परिस्थितियों से है।

भारत में, ज्यादातर टर्म और लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी आमतौर पर युद्ध या युद्ध जैसे ऑपरेशन की वजह से होने वाली मौत को जनरल एक्सक्लूजन में शामिल नहीं करती हैं। पॉलिसीबाजार डॉट कॉम के हेड (टर्म इंश्योरेंस) वरुण अग्रवाल बताते हैं कि अधिकांश टर्म लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी युद्ध या आतंकवादी गतिविधियों के कारण होने वाली मृत्यु को कवर करती हैं, क्योंकि इन घटनाओं को आमतौर पर पॉलिसी कवरेज के

बाहर नहीं रखा जाता है। ऐसी स्थिति में बीमा कंपनियां आतंकी हमले या युद्ध से मौत को प्राकृतिक या दुर्घटनावश हुई मृत्यु की तरह ही मानती हैं। युद्ध या आतंकी हमले में पॉलिसीधारक की मौत होने पर नॉमिनी या कानूनी वारिस को डेथ बेनिफिट मिलता है। टर्म इंश्योरेंस के अंदर एक महत्वपूर्ण एक्सक्लूजन यह है कि पॉलिसी शुरू होने के पहले साल के अंदर अगर व्यक्ति आत्महत्या करता है तो उसे कवर नहीं किया जाएगा, जबकि अन्य एक्सक्लूजन्स में बीमा कंपनी के आधार पर खतरनाक गतिविधियों, क्रिमिनल एक्ट या नशीले पदार्थों के सेवन के कारण मृत्यु शामिल हो सकती है।

टर्म या लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी में युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति को साफ तौर पर कवरेज से बाहर नहीं रखा गया है। हालांकि, बीमा कंपनियों के इंटरनल रिस्क मैनेजमेंट प्रोटोकॉल होते हैं। इनके आधार पर कुछ क्षेत्रों को हाई-रिस्क एरिया के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। ये ऐसे इलाके होते हैं, जहां संघर्ष या अशांति की आशंका ज्यादा होती है। यदि पॉलिसीधारक ऐसे क्षेत्र में रहता है या वहां यात्रा करता है, तो बीमा कंपनी अंडरराइटिंग नियमों के आधार पर क्लेम देने से मना कर सकती है।

स्वास्थ्य बीमा आज के समय में हर शख्स के लिए एक जरूरत बन गया है, जो इलाज पर जेब से होने वाले भारी-भरकम खर्च से बचाता है। ज्यादातर हेल्थ इंश्योरेंस पॉलिसियों में वॉर एक्सक्लूजन क्लॉज या फिर स्पेसिफिक एक्सक्लूजन में युद्ध और युद्ध जैसी स्थिति का जिक्र होता है। जिसमें साफ लिखा होता है कि युद्ध, आतंकी हमले, या युद्ध जैसी परिस्थितियों में लगी चोटों के इलाज का खर्च इंश्योरेंस में कवर नहीं होता है। इसका मतलब है कि अगर किसी व्यक्ति को युद्ध जैसे हालातों में चोट लगती है और उसे अस्पताल में दाखिल होने की जरूरत पड़ती है, तो इलाज का सारा खर्च उसे अपनी जेब से उठाना होगा। हालांकि, कुछ खास परिस्थितियों में बीमा कंपनियां युद्ध-संबंधी चोटों को कवर करने के लिए राइडर या विशेष पॉलिसी की पेशकश करती हैं। ये राइडर ज्यादा प्रीमियम के बदले युद्ध जैसी परिस्थिति में भी इंश्योरेंस कवरेज देते हैं। अगर आप ऐसे क्षेत्र में रहते हैं जहां युद्ध या आतंकी गतिविधियों का खतरा ज्यादा है, तो ऐसी विशेष पॉलिसी या राइडर लेना फायदेमंद हो सकता है।

घर या गाड़ी पर क्या मिलेगा इंश्योरेंस क्लेम

ज्यादातर सामान्य इंश्योरेंस पॉलिसियों खासकर होम और मोटर इंश्योरेंस में वॉर एक्सक्लूजन क्लॉज होता है। इसका मतलब यह है कि युद्ध या युद्ध जैसी परिस्थितियों में आपके घर या गाड़ी को होने वाला नुकसान इंश्योरेंस में कवर नहीं होगा। इसका मतलब है कि युद्ध या बमबारी में आपके घर को नुकसान पहुंचता है तो उसकी मरम्मत या दोबारा से बनवाने के खर्च को इंश्योरेंस पॉलिसी कवर नहीं करेगी। होम इंश्योरेंस भूकंप, बाढ़ या आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान को तो कवर करती है, लेकिन आमतौर पर युद्ध जैसी स्थिति में होने वाले नुकसान को नहीं। अगर आप किसी ऐसे इलाके में रहते हैं, जहां युद्ध या हमले का खतरा ज्यादा रहता है, तो हाई रिस्क जोन के लिए खासतौर पर तैयार स्पेशलाइज्ड कवरेज ले सकते हैं। इसी तरह, आपकी कॉम्प्रिहेंसिव मोटर व्हीकल पॉलिसी बाढ़, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं और आग, चोरी जैसी मानव-निर्मित आपदाओं से होने वाले नुकसान को कवर करती है। यानी अगर आपकी गाड़ी पर मिसाइल गिर जाती है, तो उसका नुकसान आपकी कार पॉलिसी में कवर नहीं होगा।

इंश्योरेंस पॉलिसी का रिव्यू करना जरूरी

हर शख्स के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि वह अपने पॉलिसी दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें और समझें कि पॉलिसी में क्या चीजें कवर हैं तथा कौन-सी कवर नहीं हैं। भू-राजनीतिक तनाव के वक्त में अपने इंश्योरेंस कवरेज की समीक्षा करना, किसी तरह की दुविधा होने पर बीमा कंपनी से संपर्क करना और जरूरत के हिसाब से पर्याप्त कवर लेना पहले से कहीं ज्यादा जरूरी हो गया है।

दुनिया को समझना होगा, भारत का न्यू नॉर्मल

ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम ने विश्व समुदाय को स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि अब हम किसी और के आश्रित नहीं है। ना अमेरिका की ओर देखा, ना रूस से पूछा और ना ही संयुक्त राष्ट्र से कोई सहायता मांगी। जो करना था, स्वयं उसकी कार्य योजना बनाई, और स्वयं ही उसे धरती पर उतारा। ये वही भारत है जो कभी हमलों के बाद बयान देता था और अंतरराष्ट्रीय सहायता की प्रतीक्षा करता था। लेकिन इस बार भारत ने ये दिखा दिया कि अब हम अपने निर्णय स्वयं लेते हैं और अपनी लड़ाई स्वयं अपने सामर्थ्य से लड़ते हैं। यह भारत की रणनीतिक आत्मनिर्भरता का स्पष्ट संकेत है, यानी अब हम दूसरों की सहमति या सहायता पर नहीं, अपनी सोच, शक्ति, सामर्थ्य और साधनों पर विश्वास करते हैं। ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य ना राष्ट्र पर आधिपत्य की कामना थी, ना किसी सरकार गिराने या परिवर्तन की।

डॉ. आशीष वशिष्ठ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुद्ध पूर्णिमा दिन राष्ट्र के नाम अपने 22 मिनट के संबोधन में पाकिस्तान को स्पष्टतः चेता दिया कि अगर हमारे भारत की ओर आँख उठाकर भी देखा तो वो हश्र होगा कि दुनिया याद करेगी। राष्ट्र के नाम संदेश के अगले दिन पीएम ने आदमपुर एयरबेस पहुंचकर जवानों का उत्साह और मनोबल बढ़ाया। आदमपुर में प्रधानमंत्री के साथ समवेत स्वर में जब जवानों ने भारत माता की जय का उद्घोष किया तो उस निनाद की गूंज और प्रतिध्वनि पाकिस्तान ही नहीं अखिल विश्व ने स्पष्ट तौर पर सुनी।

पीएम ने अपने संबोधन में जितनी स्पष्टवादिता, दृढ़ता और विश्वास के साथ सधे और नपे–तुले शब्दों में अपनी बात विश्व के समक्ष रखी है, ऐसा साहस उनका कोई पूर्ववर्ती दिखा नही सका। पाकिस्तान के साथ अब तक हुए चार युद्ध, बालाकोट और उरी स्ट्राइक में उसे इतने गहरे घाव नहीं लगे, जितने ऑपरेशन सिंदूर ने उसे दिये। अपने स्वभाव से विवश पाकिस्तान पहलगाम आतंकी घटना के बाद इसी सोच के साथ रहा होगा, भारत प्रत्युत्तर में अधिक से अधिक एयर स्ट्राइक या उरी जैसा आक्रमण करेगा। लेकिन उसके अनुमान और विचार धरे के धरे रह गए। और भारत ने जो विध्वंस ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से मचाया, उसकी कल्पना भी आतंकियों और उनके जन्मदाताओं एवं शरणदाताओं की कल्पना से भी परे थी।

भारत ने लड़ाई के मोर्चे पर ही नहीं, बल्कि सिंधु जल संधि को स्थगित करने जैसा ऐतिहासिक और साहसी कदम भी उठाया। 1965, 1971 और 1999 कारगिल युद्ध और तमाम छोटी–बड़ी आतंकी घटनाओं में पाकिस्तान की स्पष्ट भूमिका के उपरांत सिंधु जल संधि स्थगित करने का साहस भारत दिखा नहीं पाया। बालाकोट और उसी स्ट्राइक, जम्मू कश्मीर में धारा 370 को खत्म करने जैसे बड़े कदम उठाने के बाद भी पाकिस्तान भारत को हल्के में लेता रहा। वास्तव में त्रुटि पाकिस्तान की नहीं, हमारी ही रही। हमारे देश के भीतर एक ऐसी मंडली हैं, जिनके हृदय में भारत से अधिक पाकिस्तान के लिये प्रेम, पक्षपात और दया भावना उछाल मारती है। यही मंडली हर आतंकी घटना के बाद भारत पाकिस्तान के विरुद्ध कड़े कदम उठाने का प्रपंच और स्वांग रचती है। प्रोपेगेंडा करने और नैरेटिव गढ़ने में इस मंडली को महारत प्राप्त है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी ये मंडली सक्रिय हो गई थी। वो अलग बात है कि इस बार यह अपना एजेंडा चलाने में सफल नहीं हुई। वहीं पाकिस्तान को सख्त सबक सिखाने की बजाय जुबानी जमा खर्च ज्यादा करने की जो परंपरा नेहरू–इंदिरा के शासन में फली फूली, 2014 में मोदी सरकार के गठन से पूर्व तक भारत उसी नीति का सिर झुकाकर अनुसरण करता रहा। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भी पाकिस्तान को प्रत्युत्तर में एयर स्ट्राइक से अधिक की उम्मीद नहीं थी। उसे लग रहा था भारत की सत्ता संभालने वालों में बड़े, प्रभावशाली और कठोर निर्णय लेने का राजनीतिक साहस नहीं है। लेकिन पाकिस्तान पता नहीं यह कैसे भूल गया कि पीएम मोदी खतरे उठाने और साहसी निर्णय लेने के लिए जाने जाते हैं। उनकी प्रसिद्धि, साख और लोकप्रियता की यूएसपी जोखिम उठाना ही तो है। पीएम मोदी की दृढ राजनीतिक इच्छा शक्ति का समर्थन पाकर हमारे वीर जवानों ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने पाकिस्तान को उदाहरण के साथ अच्छे से समझा दिया है कि अब खेल बदल चुका है। खेल के खिलाड़ी बदल चुके हैं। भारत की सत्ता जिनके हाथों में हैं, उनका नारा नेशन फर्स्ट का है।

ऑपरेशन सिंदूर के रूप में भारत ने न केवल आतंक के पोषक और जनक पाकिस्तान को करारा उत्तर दिया, बल्कि एक नया सैन्य और रणनीतिक सिद्धांत स्थापित कर दिया। 7 से 10 मई के बीच चार दिनों तक चले इस सीमित, लेकिन तीव्र सैन्य अभियान ने न केवल पाकिस्तान को सैन्य रूप से झकझोर कर रख दिया, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की साख, क्षमता और इच्छाशक्ति का ऐसा प्रदर्शन किया जो दशकों में पहली बार देखा गया। ऑपरेशन सिंदूर से भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि आतंक के विरूद्ध अब वह चुप नहीं बैठेगा, घर के भीतर घुसकर मारेगा।

पहलगाम घटना के बाद भारत ने बातें नहीं की, डोजियर सौंपने की तैयार नहीं की, सीधे घर में घुसकर मारा, सीधे एक्शन लिया। पाकिस्तान के अंदर घुसकर 15 से अधिक आतंकियों और सेना से जुड़े ठिकानों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। भारत ने केवल आतंकी ठिकानों पर नहीं, उनके ड्रोन कंट्रोल सेंटर और एयरबेस तक को निशाना बनाया। ये दिखाने के लिए कि अगर आवश्यकता पड़ी, तो भारत सीधे उनके सीने तक पहुंच सकता है। ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य बहुत स्पष्ट था- आतंक का ढांचा तोड़ना, अपनी सैन्य ताकत दिखाना, शत्रु को पुनः सोचने के लिए विवश करना और विश्व को यह बताना कि यह परिवर्तित भारत है। और यह परिवर्तित भारत अब नई सुरक्षा नीति पर चल रहा है।

यह बदला हुआ भारत है, भारत के इस बदले हुए मिजाज और कड़े निर्णय लेने के साहस को पाकिस्तान समझने से चूक गया। जिसका परिणाम अखिल विश्व के समक्ष है। भारत ने घर में घुसकर जब चाहा, जहां चाहा, वहां हमला किया। आतंकी खत्म किये, आतंक के ठिकाने ध्वस्त किये और पाकिस्तान के सैन्य हमलों को अपाहिज और पंगु बना डाला। भारतीय सेना और हमारे डिफेंस सिस्टम की श्रेष्ठता और सटीकता ने पाकिस्तान ही नहीं उसके सहयोगियों और हितैषी अमेरिका, चीन और तुर्की के जेट फाइटर, ड्रोन्स, एयर डिफेंस सिस्टम और आयुध की निम्न गुणवत्ता को अनावृत कर डाला।

पाकिस्तान में फलने फूलने वाले आतंकियों को कड़ी सीख देने के लिए अच्छी तरह चिंतन–मंथन के बाद ऑपरेशन सिंदूर संचालित हुआ। इसे स्वैच्छिक युद्ध में परिवर्तित नहीं होने दिया गया, लेकिन आतंक को कठोर उत्तर भी दे दिया गया। भारत ने ये दिखा दिया कि अब युद्ध का अर्थ केवल बम-विस्फोट और सीमा लांघना नहीं होता। अब लड़ाई सोच-समझकर, सीमित परिधि में और स्पष्ट उद्देश्य के साथ लड़ी जाती है।

ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम ने विश्व समुदाय को स्पष्ट तौर पर बता दिया है कि अब हम किसी और के आश्रित नहीं है। ना अमेरिका की ओर देखा, ना रूस से पूछा और ना ही संयुक्त राष्ट्र से कोई सहायता मांगी। जो करना था, स्वयं उसकी कार्य योजना बनाई, और स्वयं ही उसे धरती पर उतारा। ये वही भारत है जो कभी हमलों के बाद बयान देता था और अंतरराष्ट्रीय सहायता की प्रतीक्षा करता था। लेकिन इस बार भारत ने ये दिखा दिया कि अब हम अपने निर्णय स्वयं लेते हैं और अपनी लड़ाई स्वयं अपने सामर्थ्य से लड़ते हैं। यह भारत की रणनीतिक आत्मनिर्भरता का स्पष्ट संकेत है, यानी अब हम दूसरों की सहमति या सहायता पर नहीं, अपनी सोच, शक्ति, सामर्थ्य और साधनों पर विश्वास करते हैं।

ऑपरेशन सिंदूर का उद्देश्य ना राष्ट्र पर आधिपत्य की कामना थी, ना किसी सरकार गिराने या परिवर्तन की। एकमात्र बात विश्व को बतानी थी कि यदि भारत पर आक्रमण हुआ, तो उत्तर अवश्य मिलेगा और ऐसा मिलेगा कि पुनः सोचने पर विवश कर देगा। अब भारत की लड़ाई का ढंग परिवर्तित हो गया है। यह केवल अस्त्र–शस्त्र नहीं दिखाता, यह बताता है कि कब, कहां और कैसे उनका प्रयोग करना है। यह एक नया भारत है- जो केवल निनाद नहीं उठाता, अब प्रभाव और धमक भी दिखाता है। अब भारत प्रतिक्रिया में नहीं चलता, कर्मण्यता पर विश्वास करता है और नई दिशा तय करता है। यह परिवर्तन केवल एक रणनीति नहीं है, ये मानसिकता का परिवर्तन है। इसलिए पीएम मोदी ने आदमपुर एयर बेस में कहा कि, ऑपरेशन सिंदूर भारत का न्यू नॉर्मल है। यही मानसिक परिवर्तन भारत का न्यू नॉर्मल है। और इस न्यू नॉर्मल को अखिल विश्व जितनी जल्दी समझेगा, वो उसके और शेष दुनिया के लिए हितकारी, सुखप्रद और शांतिप्रद होगा।

लड्डू गोपाल की सेवा में इन नियमों का पालन करना आवश्यक

आप में से बहुत से लोगों के घर लड्डू गोपाल की सेवा होती होगी। लड्डू गोपाल की सेवा से जुड़े कई नियम शास्त्रों में वर्णित है। ऐसा माना जाता है कि इन नियमों का पालन अवश्य करना चाहिए नहीं तो लड्डू गोपाल की सेवा में दोष लगता है। इसके अलावा, शास्त्रों में यह भी उल्लेख मिलता है कि जब लड्डू गोपाल नाराज होते हैं या किसी व्यक्ति से प्रसन्न होते हैं तो कई प्रकार के संकेत उस व्यक्ति को मिलने लगते हैं।

लड्डू गोपाल के खुश होने के संकेत

लड्डू गोपाल जब प्रसन्न होते हैं तो इसका सबसे पहले संकेत तुलसी के माध्यम से मिलता है। अगर आपके घर में तुलसी का पौधा लगा हुआ है तो वह पौधा अपेक्षा से ज्यादा ही तेजी से बढ़ने लगेगा। इसके अलावा, तुलसी की पत्तियां हरी से बैंगनी होनी शुरू हो जाएंगी क्योंकि बैंगनी रंग की पत्तियों को श्यामा तुलसी कहा जाता है।

लड्डू गोपाल अगर आपसे प्रसन्न हैं तो आपको हर पल उनके पास होने का आभास होना शुरू हो जाएगा। इसके अलावा, जब भी आपका मन परेशान होगा तो आपको बांसुरी की धुन बजती से महसूस होगी।

आपको ऐसा लगेगा कि स्वयं लड्डू गोपाल आपके पास बैठकर बांसुरी बजा रहे हैं। आपको उनका स्पर्श महसूस होने लगेगा।

लड्डू गोपाल अगर आपसे प्रसन्न हैं तो आपको आपके घर में दिव्य ऊर्जा का आभास होने लगेगा। इसके अलावा, अगर आपके घर में कहीं से अचानक मोरपंख आ गिरे या आपको अचानक ही मोर के दर्शन हो जाएं तो यह भी एक संकेत है कि लड्डू गोपाल न सिर्फ आपसे प्रसन्न हैं बल्कि वह हर कदम पर आपके साथ हर स्थिति में हैं।

इन चीजों के बिना घर में नहीं रखने चाहिए लड्डू गोपाल?

आजकल ज्यादातर घरों में लड्डू गोपाल देखने को मिल जाते हैं। लोग पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ लड्डू गोपाल को अपने घर ले जाते हैं और उनकी सेवा करते हैं। हालांकि लड्डू गोपाल की सेवा के दौरान कुछ नियमों का पालन आवश्यक माना गया है। इन नियमों की अनदेखी करने से लड्डू गोपाल की सेवा में दोष पैदा होता है और उनकी सेवा की विधि दूषित हो जाती है। घर में लड्डू गोपाल को कुछ चीजों के बिना बिलकुल स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे उनकी सेवा में बाधा आती है और पूजा का पूरा फल भी नहीं मिलता है।

घर में बंसी के बिना न रखें लड्डू गोपाल

बंसी श्री कृष्ण की प्रिय मानी जाती है। लड्डू गोपाल श्री कृष्ण का बाल स्वरूप हैं। ऐसे में उन्हें घर में बिना बंसी (बंसी के उपाय) के स्थापित करना उचित नहीं माना गया है।

घर में पालने के बिना न रखें लड्डू गोपाल

लड्डू गोपाल की सेवा बालक के रूप में की जाती है। ऐसे में अगर लड्डू गोपाल को घर लाना है तो पहले घर में पालना अवश्य लगाना चाहिए।

घर में मंदिर के बिना न रखें लड्डू गोपाल

कई लोग लड्डू गोपाल को मंदिर में रखने के बजे अपने कमरे में ही स्थापित कर देते हैं। बिना मंदिर के लड्डू गोपाल को घर में नहीं रखना चाहिए।

श्री राधा के बिना न रखें लड्डू गोपाल

लड्डू गोपाल की मूर्ति घर में रखना चाहते हैं तो साथ में श्री राधा रानी के बाल स्वरूप की प्रतिमा भी अवश्य स्थापित करें। बिना राधा कृष्ण कहां।

लड्डू गोपाल को किन-किन चीजों से स्नान कराना चाहिए?

हम से बहुत से लोगों के घर में लड्डू गोपाल स्थापित होंगे। ऐसा माना जाता है कि लड्डू गोपाल स्वयं जिससे अपनी पूजा-सेवा करवाना चाहते हैं सिर्फ उसी के मन में प्यार का भाव जगाते हैं। अगर लड्डू गोपाल को किसी से अपनी सेवा-पूजा नहीं करवानी है तो वह लाख कोशिश क्यों न करे उसे लड्डू गोपाल को घर लाने का मौका नहीं मिल पाता है। वहीं, लड्डू गोपाल की पूजा की बात करें तो शास्त्रों में पूजा-सेवा से जुड़े कई नियम बताये गए हैं। वहीं, लड्डू गोपाल के स्नान के बारे में भी बहुत कुछ वर्णन मिलता है, जैसे कि लड्डू गोपाल को कब स्नान कराना चाहिए, किसी विधि से स्नान कराना चाहिए और किन-किन वस्तुओं से स्नान कराना चाहिए।

लड्डू गोपाल को कराएं गोपीचंदन से स्नान

गोपी चंदन लड्डू गोपाल का अति प्रिय माना जाता है। ऐसे में लड्डू गोपाल को रोजाना गोपी चंदन (चंदन के उपाय) से स्नान कराना चाहिए। गोपी चंदन से स्नान कराने से न सिर्फ लड्डू गोपाल प्रसन्न होते हैं बल्कि उनकी नित्य रूप से शुद्ध बनी रहती है।

लड्डू गोपाल को कराएं केसर से स्नान

लड्डू गोपाल को स्नान कराते समय केसर का प्रयोग भी किया जा सकता है। केसर से स्नान कराने से लड्डू गोपाल का मन हर्षित रहता है और उनकी कृपा से घर में शुभता एवं सकारात्मकता बनी रहती है। घर में खुशहाली का आगमन होता है। लड्डू गोपाल को कराएं पंचामृत से स्नान लड्डू गोपाल को पंचामृत से स्नान कराना भी शुभ माना जाता है। हालांकि रोजाना पंचामृत का प्रयोग करने पर मनाही है। पंचामृत से स्नान मात्र मंदिरों में रोजाना होता है। घर में लड्डू गोपाल को उत्सव पर ही पंचामृत स्नान कराना चाहिए।

श्री कृष्ण की लीलाओं की छवि समेटे हुए है वृंदावन की हर गली और मंदिर

चौरासी कोस में समाये ब्रज का गढ़ है वृंदावन धाम जहां की हर एक गली और मंदिर श्री कृष्ण की लीलाओं की छवि समेटे हुए है। वृंदावन में कई ऐसे मंदिर या स्थान हैं जो रहस्यमयी हैं और चात्मकारों की कहानियों से परिपूर्ण हैं। ऐसा ही एक मंदिर और है जिसके लिए यह कहा जाता है कि इस मंदिर में से भगवान विष्णु के वैकुण्ठ धाम का मार्ग जाता है।

वृन्दावन का रहस्यमयी मंदिर वृन्दावन में एक मंदिर ऐसा भी है जो दक्षिण शैली के आधार पर निर्मित है। इस मंदिर का नाम है रंगनाथ मंदिर। ब्रज में इस मंदिर (मंदिर जानें के लाभ) को रंगजी मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में भगवान रंगनाथ स्थापित हैं। इस मंदिर में मौजूद एक ऐसे द्वार के बारे में सुनने को मिलता है जो साल में मात्र एक बार खुलता है। यह द्वार वैकुण्ठ द्वार के नाम से जाना जाता है। मान्यता है कि इस द्वार के पीछे से भगवान विष्णु के वैकुण्ठ धाम तक का मार्ग जाता है। यही कारण है कि इस द्वार को वैकुण्ठ द्वार कहा जाता है। सिर्फ वैकुण्ठ द्वादशी के दिन इस द्वार को खोला जाता है। वैकुण्ठ (वैकुंठ और गोलोक धाम में अंतर) द्वादशी के दिन ही रंगनाथ भगवान इस द्वार से दर्शन देते हैं। इस द्वार को लेकर कई मान्यताएं भी हैं। एक मान्यता कहती है कि जो भी व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त होता है अगर उसके पुण्यों के चलते उसे वैकुण्ठ धाम की प्राप्त होती है तो उसकी आत्मा विश्व में कहीं भी हो वह रंगजी मंदिर के इस वैकुण्ठ द्वार से भगवान विष्णु के धाम जाती है। दूसरी मान्यता यह है कि जो भी व्यक्ति इस वैकुण्ठ धाम के दर्शन कर लेता है उसे जीवन भर भगवान विष्णु का साथ और सानिध्य प्राप्त होता है। भगवान विष्णु की कृपा हमेशा उस व्यक्ति पर बनी रहती है।

आरसीबी-केकेआर मुकाबले से फिर से शुरू होगी लीग, टेस्ट से संन्यास ले चुके कोहली पर नजरें

बंगलूरू, एजेंसी

आईपीएल 2025 के दूसरे चरण का आगाज शनिवार से होने जा रहा है। यह लीग का 58वां मुकाबला होगा और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच खेला जाएगा।इस मैच में सभी की निगाहें हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने वाले विराट कोहली पर होंगी।

लीग में 10 दिनों की अप्रत्याशित रुकावट

10 दिनों के अप्रत्याशित रुकावट के बाद आरसीबी और केकेआर दोनों प्लेऑफ में पहुंचने के लिए पूरा जोर लगाएंगे। आरसीबी 11 मैचों में 16 अंकों के साथ तालिका में दूसरे स्थान पर है और केकेआर के खिलाफ जीत टीम के लिए प्लेऑफ में जगह लगभग पक्की कर देगी। वहीं, केकेआर 12 मैचों में 11 अंकों के साथ तालिका में छठे स्थान पर है और एक भी हार मौजूदा चैंपियन की नॉकआउट में जगह बनाने की उम्मीदों को खत्म कर देगी।

दोनों टीमें शानदार लय में चल रहीं

लीग की रुकावट से पहले दोनों टीमें शानदार लय में थी। आरसीबी ने जहां अपने पिछले चारों मैचों में जीत दर्ज की है, जबकि केकेआर की टीम लगातार दो जीत के साथ इस मैच में उतरेगी। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि ये टीमों अपनी लय को किस तरह से बनाये रखती है। कागजों पर दोनों टीमों की तुलना करें तो इसमें कोई शक नहीं की केकेआर पर आरसीबी का पलड़ा भारी होगा।

कप्तान पाटीदार के अंगुली में लगी है चोट

चेन्नई सुपरकिंग्स के खिलाफ चोटिल हुए कप्तान रजत पाटीदार ने अभ्यास सत्र में बिना किसी परेशानी के बल्लेबाजी की। पाटीदार को अंगुली में चोट लगी थी, लेकिन नेट सत्र में उन्होंने शानदार बल्लेबाजी की। मेजबान टीम के अधिकांश विदेशी खिलाड़ी भी भारत-पाकिस्तान सैन्य टकराव के बाद स्वदेश लौट आए हैं। फिल सॉल्ट, लुंगी एनगिडी, टिम डेविड, लियाम लिविंगस्टोन और रोमारियो शेफर्ड जैसे खिलाड़ी टीम के लिए उपलब्ध हैं।

दोनों टीमों की संभावित प्लेइंग-11

- आरसीबी- जैकब बेथेल/फिल सॉल्ट, विराट कोहली, स्वास्तिक चिकारा/मयंक अग्रवाल, रजत पाटीदार (कप्तान/फिटनेस के अधीन), जितेश शर्मा (विकेटकीपर), टिम डेविड, क्रुणाल पांड्या, रोमारियो शेफर्ड, भुवनेश्वर कुमार, लुंगी एनगिडी, यश दयाल। सुयश शर्मा इम्पैक्ट प्लेयर हो सकते हैं।
- केकेआर- रहमनुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), सुनील नरेन, अजिंक्य रहाणे (कप्तान), अंगकृष रघुवंशी, मनीष पांडे, आंद्रे रसेल, रिंकू सिंह, अनुकूल रॉय, रमनदीप सिंह, वैभव अरोड़ा, वरुण चक्रवर्ती। हर्षित राणा इम्पैक्ट प्लेयर हो सकते हैं।

मयंक अग्रवाल खुद को साबित करना चाहेंगे

देवदत्त पडिक्कल और तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की चोट के कारण गैरमौजूदगी हालांकि एक बड़ी समस्या हो सकती है। आरसीबी पडिक्कल की जगह लेने वाले मयंक अग्रवाल से इस मौके को भुनाने की उम्मीद करेगी। हेजलवुड के कंधे में चोट है और फ्रेंचाइजी ने अभी तक उनकी उपलब्धता के बारे में जानकारी नहीं दी है।

कोहली पर होंगी सभी की निगाहें

मैच में हालांकि सबकी नजरें कोहली पर होंगी। स्टेडियम में भी दर्शक उनके नाम का सबसे ज्यादा नारा लगाएंगे। इस दिग्गज बल्लेबाज ने इस सप्ताह की शुरुआत में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की थी। सोशल मीडिया पर चल रही चर्चाओं पर अगर गौर करें तो प्रशंसक खेल के पारंपरिक प्रारूप को सबसे ज्यादा महत्व देने वाले इस बल्लेबाज को सम्मानित करने के लिए सफेद जर्सी पहनने की योजना बना रहे हैं।

प्रभावशाली पारियां खेलना चाहेंगे विराट कोहली

शानदार लय में चल रहे कोहली भी टेस्ट करियर के अचानक समाप्त होने के बाद बल्ले से कुछ प्रभावशाली पारियां खेलना चाहेंगे। केकेआर को मौजूदा सत्र में सबसे ज्यादा निराशा अपने बल्लेबाजों से हुई है। कप्तान अजिंक्य रहाणे और युवा अंगकृष रघुवंशी के अलावा किसी भी बल्लेबाज ने निरंतरता नहीं दिखायी हैं।

केकेआर की बल्लेबाजी सबसे बड़ी समस्या

केकेआर टीम के लिए लीग चरण के सभी मैच करो या मरो की तरह है ऐसे में उसे वेंकटेश अय्यर, आंद्रे रसेल और रिंकू सिंह से प्रभावी पारियों की उम्मीद होगी। टीम को इंग्लैंड के अनुभवी हरफनमौला मोईन अली की कमी खलेगी। मोईन वायरल बुखार के कारण लीग से बाहर हो गए हैं। वरुण चक्रवर्ती, सुनील नरेन, वैभव अरोड़ा और हर्षित राणा की केकेआर की गेंदबाजी लाइन-अप ने कई मौकों पर महंगे साबित होने के बावजूद अपनी पकड़ बनाए रखी है।

शुभमन गिल को अभी समय चाहिए, रविंद्र जडेजा बना सकते हैं कप्तानः अश्विन

चेन्नई । पूर्व भारतीय क्रिकेटर रविचंद्रन अश्विन ने रोहित शर्मा और विराट कोहली के संन्यास के बाद भारतीय टेस्ट कप्तानी के लिए अपने लंबे समय के स्पिन जोड़ीदार रवींद्र जडेजा का नाम सुझाया। अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल 'ऐश की बात' पर गुरुवार को यह राय जाहिर की।अश्विन ने कप्तानी के दावेदारों पर चर्चा करते हुए कहा कि कुछ स्पष्ट विकल्प हैं, लेकिन मैं रवींद्र जडेजा का नाम भी जोड़ना चाहूंगा। कप्तान या उप-कप्तान की चर्चा से पहले खिलाड़ी का प्लेइंग इलेवन में होना जरूरी है। जडेजा एक स्वाभाविक चयन हैं। उन्होंने आगे कहा कि जडेजा टीम के सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। अगर नए खिलाड़ी को दो साल तक तैयार कर कप्तान बनाया जा सकता है, तो जडेजा भी दो साल तक यह भूमिका निभा सकते हैं। उन्हें उप-कप्तान के रूप में भी आजमाया जा सकता है।36 वर्षीय जडेजा ने 80 टेस्ट में 3,370 रन (34.74 की औसत, 4 शतक, 22 अर्धशतक) और 323 विकेट लिए हैं। हालांकि, जडेजा ने भारत के लिए किसी भी प्रारूप में कप्तानी नहीं की है। उन्होंने 2022 आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी की थी, लेकिन 8 में से केवल 2 मैच जीतने के बाद बीच सीजन में एमएस धोनी को कप्तानी सौंप दी थी।

जॉनसन का बेतुका बयान, विदेशी खिलाड़ियों को शेष मैचों से दूर रहने को कहा

सिडनी, एजेंसी ।पूर्व ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज मिचेल जॉनसन का एक बेतुका बयान सामने आया है। उन्होंने कहा है कि विदेशी खिलाड़ियों का आईपीएल के शेष मैचों के लिए लौटना बुद्धिमानी भरा फैसला नहीं है। उन्होंने विदेशी खिलाड़ियों से भारत-पाकिस्तान तनाव की वजह से उत्पन्न मौजूदा परिस्थितियों को लेकर बयान दिया और कहा कि विदेशी खिलाड़ियों को पैसों से ज्यादा अपनी सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष और सीमा पर तनाव के कारण दुनिया की सबसे बड़ी टी20 लीग को नौ मई को निलंबित कर दिया गया था।

राधिका आप्टे की सिस्टर मिडनाइट सिनेमाघरों में होगी रिलीज

अभिनेत्री राधिका आप्टे की बाफ्टा नॉमिनेटेड फिल्म सिस्टर मिडनाइट 23 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। फिल्म का लेखन और निर्देशन करण कंधारी ने किया है। यह उनके निर्देशन की पहली फिल्म है। इसका निर्माण एलेस्टेयर क्लार्क, एना ग्रिफिन और एलन मैकएलेक्स द्वारा किया गया है।

फिल्म की कहानी राधिका आप्टे के किरदार के आस-पास घूमती है। नवविवाहित उमा (राधिका आप्टे) अपने पति गोपाल (अशोक पाठक) के साथ जीवन में सामंजस्य बैठाने की कोशिश करती है। मुंबई में एक छोटे से कमरे में साथ रहना उसके लिए आसान नहीं है। खासकर तब जब गोपाल घंटों गायब रहता है। बेमन से वह पड़ोसी शीतल (छाया कदम) की मदद से खाना बनाना सीखती है। इसके बाद गोपाल के चचेरे भाई की शादी में शामिल होने के बाद असंतुष्ट उमा के लिए चीजें बदल जाती हैं। मच्छर के काटने से वह बीमार महसूस करने लगती है, वह पीली और पतली हो जाती है। धीरे-

बाफ्टा में हुई नामांकित

इस साल के बाफ्टा में उत्कृष्ट ब्रिटिश डेब्यू के लिए नामांकित 'सिस्टर मिडनाइट' 77वें कान फिल्म फेस्टिवल में सबसे चर्चित फिल्म थी। यह फिल्म गोल्डन कैमरा पुरस्कार और डायरेक्टर्स फोर्टनाइट के लिए नामांकित की गई थी। ब्रिटिश इंडिपेंडेंट फिल्म अवार्ड्स (बिफ्टा) के लिए भी यह नामांकित हुई थी।

ऐसी फिल्म करना चाहता था, जिससे सम्मान मिले

वेटरन एक्टर आदित्य पंचोली के बेटे और अभिनेता सूरज पंचोली इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'केसरी वीर' को लेकर चर्चाओं में बने हैं। फिल्म इसी महीने रिलीज होने वाली। इस बीच सूरज पंचोली ने अपने करियर को लेकर बात की। साथ ही अभिनेत्री जिया खान की मौत के मामले के बाद आई मुश्किलों पर भी खुलकर बात की। बातचीत में सूरज पंचोली ने कहा, मैं कई स्क्रिप्ट सुन रहा था, लेकिन मैं ऐसी फिल्म करना चाहता था जिससे मुझे सम्मान मिले। जो भी कैमरे के पीछे या सामने काम करता है, वे सभी बहुत मेहनत करते हैं। जब आपके काम की सराहना नहीं होती है, तो आप वास्तव में निराश महसूस करते हैं। इसलिए मैं ऐसी फिल्म करना चाहता था, जिसके बारे में लोग कहें कि ठीक है, शायद सूरज सक्षम है।

'केसरी वीर' को मैंने खुले दिमाग से किया

अभिनेता ने आगे कहा, मैं फिल्मों में काम शुरू करने से पहले अपनी जिंदगी को पटरी पर लाना चाहता था। मैं एक दिन बैठा और अपने माता-पिता से बात की। मैंने कहा कि मुझे यह काम पूरा करने दीजिए, मैं बाद में काम करूंगा। मैं जो चाहूंगा करूंगा, लेकिन पहले मुझे यह काम पूरा करने दीजिए। भगवान का शुक्र है कि मैं यह सब अब कर चुका हूं। 'केसरी वीर' पहली फिल्म है जिसे मैंने नए, खुले और केंद्रित दिमाग से किया है। मैं केवल इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूं कि कैसे प्रदर्शन करना है। अच्छी चीजों में समय लगता है। अथिया शेट्टी के साथ फिल्म 'हीरो' से अपने करियर की शुरूआत करने वाले सूरज पंचोली अब 'केसरी वीर' में अथिया के पिता सुनील शेट्टी के साथ नजर आ रहे हैं। इस पर सूरज का कहना है, अथिया ने 'हीरो' में मेरे पिता के साथ काम किया और अब मैं सुनील सर के साथ काम कर रहा हूं। इसलिए, यह सब वापस आ रहा है। मेरे लिए अपने जीवन को फिर से शुरू करने के लिए इस फिल्म से बेहतर कुछ नहीं है।

23 मई को रिलीज होगी 'केसरी वीर'

'केसरी वीर' में सूरच पंचोली के साथ सुनील शेट्टी, आकांक्षा शर्मा और विवेक ओबेरॉय भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। प्रिंस धीमन द्वारा निर्देशित यह फिल्म 23 मई को सिनेमाघरों में रिलीज होनी है।

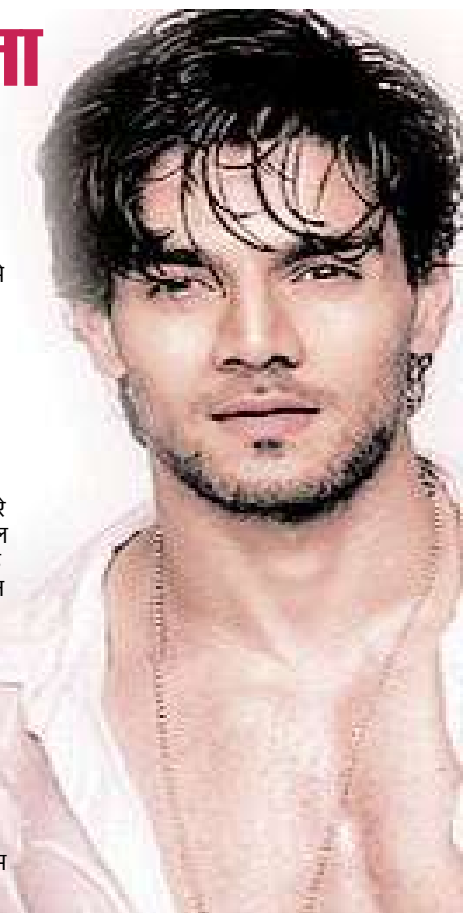

दिल्ली में आयुष्मान भारत योजना का दिख रहा असर

73 वर्षीय कैंसर मरीज को मिली नई जिंदगी

नई , एजेंसी। की बीमारी का नाम सुनकर ही लोग सहम जाते हैं। ऊपर से जांच का भारी भरकम खर्च और दवाओं की महंगी कीमतों के कारण कई मरीजों को समय पर इलाज नहीं मिल पाता। इस बीच पिछले ही माह कैंसर से पीड़ित हुए दिल्ली के रहने वाले एक 73 वर्षीय बुजुर्ग के लिए मुश्किल वक्त में आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) सहरा बनकर सामने आई। एम्स में उनका निशुल्क इलाज हुआ है। एबी-पीएमजेएवाई के तहत वह एम्स में इलाज पाने वाले दिल्ली के पहले मरीज हैं।

सादिक नगर के नजदीक सांवल नगर के रहने वाले 73 वर्षीय बुजुर्ग राकेश कुमार ने बताया कि वह प्राइवेट नौकरी से सेवानिवृत हैं। पिछले माह अचानक शौच के साथ ब्लड आने की समस्या शुरू हुई। आठ अप्रैल को जांच कराने पर पता चला कि पेट के आंत में ट्यूमर था। निजी अस्पताल में बायोप्सी और सीटी स्कैन जांच में 11,500 रुपये खर्च हुआ।

पांच अप्रैल को ही दिल्ली में एबी-पीएमजेएवाई लागू करने के लिए केंद्र सरकार के राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण और दिल्ली सरकार राज्य स्वास्थ्य एजेंसी के साथ समझौता हुआ था और

दस अप्रैल से लाभार्थियों का कार्ड बनना शुरू हुआ था लेकिन तब 70 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बुजुर्गों का इस योजना के तहत आयुष्मान वय वंदना कार्ड नहीं बन रहा था।

उन्होंने बताया कि कैंसर होने की बात जानकर मन परेशान था। किसी तरह 22 अप्रैल को एम्स में दाखिला मिला। अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान आयुष्मान भारत पोर्टल व ऐप पर उन्होंने सर्च किया तो पता चला कि उनका पंजीकरण हो सकता है और उन्हें इसका लाभ भी मिल सकता है। तब एम्स के आयुष्मान केंद्र में 27 अप्रैल को उनका कार्ड बना और 29 अप्रैल को एम्स में उनकी सर्जरी भी हो गई। इसके बाद वह करीब छह दिन एम्स में भर्ती रहे। इस दौरान उन्हें सभी आवश्यक दवाएं भी निशुल्क उपलब्ध कराई गई।

उन्होंने बताया कि एबी-पीएमजेएवाई योजना से पंजीकृत होने से पहले उन्हें कुछ दवाएं खरीदनी पड़ रही थी। सर्जरी के बाद ज्यादा दवाएं चली। यदि उन्हें एबी-पीएमजेएवाई का लाभ नहीं मिला होता तो उन्हें परेशानी हो सकती थी। सर्जरी के बाद निकाले गए ट्श्यू की जांच रिपोर्ट अभी नहीं आई है। डॉक्टर ने 15 दिन में रिपोर्ट आने पर दोबारा अस्पताल में बुलाया है। तब डाक्टर बताएंगे कि आगे उन्हें कीमोथेरेपी की जरूरत है या नहीं। फिलहाल वह ठीक हैं।

उनकी तरह अब तक दिल्ली के रहने वाले 18 मरीज एम्स में एबी-पीएमजेएवाई के तहत इलाज पा चुके हैं। जिसमें नौ 70 वर्ष से अधिक उम्र के मरीज शामिल हैं। अब तक एबी-पीएमजेएवाई का लाभ पाने वालों में

छह कैंसर मरीज, छह आर्थोपेडिक के मरीज व चार जनरल सर्जरी के मरीज शामिल हैं। आर्थोपेडिक के चार मरीजों 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले हैं। जिसमें से एक मरीज की उम्र 84 वर्ष से अधिक है। बुढ़ापे में घुटने व कूल्हे की समस्या अधिक होती है। बताया जा रहा है कि हड्डियों के बीमारी से पीड़ित बुजुर्गों को इंप्लांट भी लगाया गया है।

अकाउंटेंट की नौकरी छोड़ साइबर ठगों को मुहैया कराते थे बैंक खाते

साथी समेत गिरफ्तार

नोएडा, एजेंसी। साइबर ठगों को बैंक खाते उपलब्ध कराकर डिजिटल अरेस्ट जैसी ठगी करवाने वाले अकाउंटेंट और उसके दोस्त को साइबर क्राइम थाना पुलिस ने बृहस्पतिवार को मुरादाबाद से गिरफ्तार किया। दोनों करीब 14 करोड़ रुपये बैंक खातों में ट्रांसफर करा चुके हैं। दोनों के खिलाफ एनसीआरपी पोर्टल पर 33 शिकायत दर्ज हैं। दोनों ने नोएडा के बुजुर्ग से हुई 2.39 करोड़ की साइबर ठगी में बैंक खाते उपलब्ध कराए थे। मामले में एक आरोपित को पूर्व में जेल जा चुका है। नोएडा सेक्टर 36 के रहने वाले विदेश सेवा से सेवानिवृत्त एससी मल्होत्रा को 42 दिन डिजिटल अरेस्ट रखकर 2.39 करोड़ रुपये की ठगी की गई थी। पीड़ित ने 18 मार्च को साइबर क्राइम थाने में मामला दर्ज कराया था। पुलिस टीम साइबर ठगों की तलाश में जुटी है। जांच के दौरान दो ठगों की लोकेशन मुरादाबाद में मिली थी। पुलिस ने दोनों को बृहस्पतिवार दबोच लिया। इनकी पहचान मुरादाबाद के कृष्णा कॉलोनी के मुकेश सक्सेना व मुरादाबाद के धीमरी रोड करूला के अनीश अहमद के रूप में हुई। डीसीपी साइबर सेल प्रीति यादव ने बताया कि मुकेश पेशे से अकाउंट्स का काम करता था। पैसों की जरूरत के चलते अनीस अहमद के संपर्क में आ गया था। दोनों ने मिलकर साइबर ठगों को करंट अकाउंट खाते उपलब्ध कराने का काम शुरू कर दिया। इनमें ठगी की धनराशि मंगाकर कमीशन प्राप्त करते थे। नोएडा में हुई 2.39 करोड़ की ठगी की धनराशि में से 18 लाख रुपये प्राप्त किए थे। धनराशि को आपस में बांट लिया था। जांच में यह पता चला है कि अनीस बैंक खातों में 12 करोड़ तो मुकेश दो करोड़ रुपये ठगी के प्राप्त कर चुका है। अनीश के खिलाफ एनसीआरपी पोर्टल पर 15 और मुकेश पर 18 शिकायते हैं। इनमें दिल्ली, झारखंड, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश राज्य शामिल हैं।

दिल्ली एम्स के ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती

एयरलिफ्ट कर लाए गए, हाल-चाल जानने पहुंचे अमित शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बृहस्पतिवार को एम्स ट्रामा सेंटर पहुंचकर छत्तीसगढ़ के बीजापुर और तेलंगाना की सीमा के नजदीक कर्रेगुट्टा हिल के नजदीक माओवादियों के साथ मुठभेड़ में घायल हुए सीआरपीएफ के जवानों से मिले और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली।

उन्होंने एम्स ट्रामा सेंटर प्रशासन को उनके बेहतर इलाज और देखभाल का निर्देश दिया। बाद में उन्होंने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि सुरक्षा बल अपनी वीरता से माओवाद का नामोनिशान मिटा रहे हैं। देश को अपने जवानों पर भरोसा है और पूरा देश उन पर गर्व करता है।

सुरक्षा बलों ने कर्रेगुट्टा हिल के पास 21 दिन तक चले इस सर्च ऑपरेशन में 31 माओवादियों को मार गिराया है। इस ऑपरेशन में सीआरपीएफ के कोबरा (कमांडो बटालियन फार रेजोल्यूट एक्शन), स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) और डिस्ट्रिक्ट रिजर्व गार्ड (डीआरएफ) के जवान शामिल रहे। इस अभियान के दौरान 18 जवान आइईडी विस्फोट में घायल हुए। उन सभी का विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है। वे सभी खतरे से बाहर बताए जा रहे हैं। एम्स के एक डॉक्टर ने बताया कि ट्रामा सेंटर में सीआरपीएफ के पांच जवान भर्ती किए गए हैं, जो एयर लिफ्ट करके लाए गए हैं। उन सभी की हालत स्थिर है। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम उनका इलाज कर रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन सभी मुलाकात की। इस दौरान उनके परिजनों से भी मिले। कर्रेगुट्टा हिल के पास मुठभेड़ के दौरान घायल हुए सीआरपीएफ के 204 कोबरा बटालियन के सहायक कमांडेंट सागर बोराडे को चार मई को रायपुर से एयर लिफ्ट करके दिल्ली लाया गया था और उन्हें एम्स ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया था। उन्होंने सर्च ऑपरेशन

के दौरा अदम्य साहस का परिचय देते हुए आइईडी विस्फोट में घायल सीआरपीएफ के एक जवान को अपनी सुरक्षा का परवाह किए बगैर सुरक्षित निकालने का प्रयास किया। इस दौरान एक आईईडी ब्लास्ट होने से वह घायल हो गए। इस वजह से उनका बायां पैर क्षतिग्रस्त हो गया था और बायें हाथ में भी गंभीर चोट लगी थी।

संपादकीय

नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा चीन

भारतीय जमीन पर दावेदारी जताने की युक्तियां चीन सदा से खोजता रहता है। अरुणाचल को वह अपना हिस्सा बताता रहा है। उसके सैनिक वास्तविक नियंत्रण रेखा लांघने का प्रयास करते हैं। इस वजह से कई मौकों पर दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ जाता है। करीब पांच वर्ष पहले उसके सैनिक गलवान घाटी में घुस आए थे, जिन्हें रोकने में खूनी संघर्ष हुआ। तबसे दोनों देशों के रिश्ते तनावपूर्ण बने हुए हैं। इस बीच उसने अरुणाचल की कुछ जगहों के नाम बदल कर यह जताने का प्रयास किया कि वे उसका हिस्सा हैं।

2017 में उसने अरुणाचल प्रदेश के छह स्थानों के नए नाम की सूची जारी की थी।उसके बाद 2021 में पंद्रह स्थानों वाली दूसरी सूची और 2023 में ग्यारह अतिरिक्त स्थानों के नाम वाली एक और सूची जारी की थी। पिछले महीने तीस स्थानों के नाम बदल कर उसने एक और सूची जारी कर दी। अब कुछ और जगहों के नाम बदल दिए हैं। उसकी इस हरकत पर हर बार भारत की तरफ से तीखी प्रतिक्रिया दी जाती रही है, फिर भी वह अपनी चालबाजी से बाज नहीं आता। भारत ने फिर दोहराया है कि अरुणाचल हमेशा से भारत का अंग रहा है और रहेगा। नाम बदल देने से कोई जगह किसी और की नहीं हो जाती।

हालांकि भारत और चीन की सीमारेखा बहुत पहले से चिह्नित है, मगर चीन अपनी विस्तारवादी नीति के तहत उसे मानने से इनकार करता रहा है। भारत के हिस्से की जमीन पर कब्जा करने के इरादे से वह चोरी-छिपे और चालबाजी से घुसपैठ करने की कोशिशें करता रहता है। इसी नीति के तहत वह भारत के पड़ोसी देशों में अपनी पैठ बना कर पुलों,

सड़कों, व्यावसायिक केंद्रों आदि का निर्माण कर भारत की सीमा पर तनाव पैदा करने की कोशिश करता रहा है। मगर भारत की सामरिक शक्ति और रणनीतिक सूझ-बूझ के चलते उसे कामयाबी नहीं मिल पाती।

अभी आपरेशन सिंदूर के तहत भारत ने पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी ठिकानों को ध्वस्त करने का अभियान चलाया, तब भी चीन उसके समर्थन में उतर आया। भारत ने जब भी पाकिस्तान में पनाह पाए आतंकियों को अंतरराष्ट्रीय आतंकवादियों की सूची में डलवाने का प्रयास किया, चीन संयुक्त राष्ट्र में अपने वीटो का प्रयोग कर उसे रोकने की कोशिश करता रहा है, जबकि पूरी दुनिया आतंकवाद के खिलाफ युद्ध का समर्थन करती रही है।

चीन अच्छी तरह जानता है कि केवल जगहों के नाम बदल देने से वह इलाका उसका नहीं हो जाएगा। मगर फिर भी इस तरह की हरकतें करके वह समझता है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय उसे स्वीकार कर लेगा। पिछले ओलंपिक के समय अरुणाचल की दो खिलाड़ियों को इसलिए उसने प्रवेश से रोक दिया था कि अरुणाचल के किसी दस्तावेज पर भारत का नाम वह स्वीकार नहीं करता।

कुछ मौकों पर तो वह अरुणाचल को अपने नक्शे में शामिल कर दुनिया के सामने साबित करने की कोशिश कर चुका है कि वह उसका इलाका है। मगर भारत की तरफ से मिले सख्त प्रतिरोध की वजह से उसे हर बार मुंह की खानी पड़ी है। दरअसल, भारत की बढ़ती आर्थिक और सामरिक ताकत चीन को चुभती रही है, इसलिए वह चोरी, चालाकी और चालबाजी से भारत को कमजोर करने की चालें चलता रहता है। विचित्र है कि वह सीमा विवाद को बातचीत के जरिए सुलझाने की बातें तो करता है, पर इसके लिए कोई गंभीर पहल कभी नहीं करता।